शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 9
Issue 1
15 January, 2018

नरेंद्र कोहली के रामकथात्मक उपन्यासों में निहित राजनीतिक यथार्थ

बीज शब्द :

समकालीन परिस्थिति, मिथक, यथार्थ, पौराणिक, आधुनिक बोधगम्यता।

एक साहित्यकार कभी भी अपने समकालीन परिस्थितियों से अप्रभावित नहीं रहता है। उनके चिंतन एवं कल्पना के केन्द्र में देश-काल की स्थिति, मनुष्य एवं समाज सदैव रहते हैं। सहभोक्ता बनकर वह न सिर्फ अपने समय के तनावों, द्वन्द्वों, अंतर्विरोधों और घटनाओं के साथ तादात्म्य स्थापित करता है; वरन् अपने रचनात्मक दायित्व का निर्वहन करते हुए जीवन के यथार्थ को तलाशने एवं दिखाने की कोशिश भी करता है। अपने समय के यथार्थ को पकड़ने के लिए साहित्यकार कई माध्यमों का प्रयोग करते हैं। उनके इन प्रयोगों में मिथक सर्वथा एक सशक्त माध्यम बन कर उभरा है। मिथकों की सहायता से यथार्थ को उजागर करने का एक प्रयास उपन्यासकार नरेन्द्र कोहली जी ने भी अपने रामकथात्मक उपन्यासों के माध्यम से किया है। उन्होंनें रामायण, रामचरितमानस इत्यादि रामकथा के प्रसंगों एवं घटनाओं को वर्तमान संदर्भों से जोड़कर, यथास्थिति से अवगत कराने का एक सफल प्रयास किया है। 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' और 'युद्ध' खण्डों में विभक्त कोहली जी के 'अभ्युदय' रामकथात्मक उपन्यास की कथा में वर्णित प्रसंग पौराणिक होते हुए भी समकालीन समस्याओं एवं घटनाओं का स्मरण कराते हैं। उनका यह उपन्यास राम की पौराणिक कथा को आधुनिक बोधगम्यता के साथ प्रस्तुत करता है। उपन्यास में एक ओर जहाँ, वर्णित अनेक प्रसंग वर्तमान राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, नारी विषयक, समाज-सुधार के कार्यों के यथार्थ स्वरूप को प्रस्तुत करते हैं। वहीं दूसरी ओर इसमें उपस्थित रामकथा के प्रमुख पात्र, पाठकों के समक्ष खुद को आधुनिक रूप में प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में नरेंद्र कोहली के रामकथात्मक उपन्यासों में निहित राजनीतिक यथार्थ को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

*****

रेखा रानी
शोधार्थी, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार
E-mail : rrani140489@gmail.com

नरेंद्र कोहली के रामकथात्मक उपन्यासों में निहित राजनीतिक यथार्थ

नरेंद्र कोहली ने अपने 'अभ्युदय' उपन्यास के माध्यम से भारतीय मानस के मन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाली रामकथा को आधुनिक संचेतना के आलोक में तार्किक एवं विवेकसम्मत आधार पर पुनर्व्याख्यायित करके अपने समकालीन यथार्थ को उद्‌घाटित करने का प्रयास किया है। उन्होंने बड़ी ही कुशलतापूर्वक रामकथा का संयोजन अपने 'अभ्युदय' उपन्यास में किया है। उपन्यास की कथा का एक-एक सूत्र न केवल पूरी तरह आपस में गुथा हुआ है, बल्कि अभिजीत अर्थ की व्यंजना करता है तथा राम के संपूर्ण कथा एवं पात्रों को नए संदर्भो में सतर्क उपस्थित भी करता है। पौराणिक कथाओं में वर्तमान समाज की झलक देखने वाले कोहली जी का मानना है कि- 'उन्होंने पौराणिक इतिहास या साहित्य को उस रूप में स्वीकार नहीं किया कि वह किसी युग अथवा सृष्टि की वस्तु है। प्रकृति के नियम बदलते नहीं हैं। यदि कर्म-सिद्धांत कृष्ण के समय संभव था तो आज भी है।[1] कोहली जी सदैव से अपने परिवेश के प्रति पूर्ण सजग एवं सक्रिय रहे हैं। अपने देश के सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं के प्रकटीकरण एवं उनके समाधान के लिए उन्होंने पौराणिक युग के आदर्श स्तंभ माने जाने वाले तथा प्रत्येक काल, युग और परिवेश में प्रत्येक समाज के लिए प्रेरणा स्रोत एवं मानव समाज की शक्ति रहे श्रीराम जी को चुना। उन्होंने श्रीराम की कथा को माध्यम बनाकर देश के सभी स्तरों पर उभरी भ्रष्टाचार को प्रस्तुत करने का प्रयास किया। स्वातंत्र्योत्तर भारत के राजनीतिक परिवेश से आम जनता आक्रांत और क्षुब्ध थे। स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनैतिक परिवेश के यथार्थ चित्र को कोहली जी ने अपने रामकथा के प्रसंगों एवं पात्रों में खींचने का प्रयास किया है। उन्होंने राजनीति में फैले भ्रष्टाचार, अनाचार, शोषण-वृत्ति और मूल्य विघटन के यथार्थ रूप को 'अभ्युदय' उपन्यास में प्रस्तुत किया है। 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' और 'युद्ध' इन चार खण्डों में विभाजित 'अभ्युदय' उपन्यास की कथा के राजनैतिक प्रसंगों में अवस्थित पदलोलुपता, भ्रष्टाचार, अनीति, अराजकता, गुंडाराज, चरित्रहीनता अवसरवादिता, अहंकार, द्वेषता, युद्ध जैसे अनेक वृत्तियों में समकालीन राजनीतिक यथार्थ बोध साथ-साथ चलता है।

'दीक्षा' उपन्यास में निहित राजनीतिक यथार्थ :

'दीक्षा' चिर-प्रसिद्ध पौराणिक रामकथा पर आधृत उपन्यास है। पौराणिक होते हुए भी यह उपन्यास अपने अंदर आधुनिक युग-सत्य को समेटे वर्तमान राजनैतिक यथार्थ को उजागर करता है। उपन्यास को पढ़कर आधुनिक पाठक-मन समकालीन राजनीति को निकट से देख पाता है, उसे पहचान पाता है तथा राम के तत्कालीन युग सत्य से वर्तमान सत्य की तुलना कर पाता है। 'दीक्षा' उपन्यास की कथा का मूल प्रेरणास्रोत बंगलादेश की राजनीतिक स्थिति है। बांग्लादेश के युद्ध ने नरेंद्र कृोहली जी को प्रभावित किया था। 'साहित्य यात्रा' पत्रिका में दिए गए एक साक्षात्कार के दौरान कोहली जी ने स्वीकारा है कि- सन् 1971 में जब युद्ध हुआ बांग्लादेश का, और यह सूचना आयी कि बांग्लादेश के बुद्धिजीवियों को सामूहिक रूप से मारने के षड्‌यंत्र किये गये हैं तो मुझे पुराण याद आए।'[2] अत: बांगलादेश में पाकिस्तानी सेना द्वारा जो अत्याचयार और क्रूरताएँ की गई और उनके विरोध में वहाँ के बुद्धिजीवियों में जिस प्रकार की प्रतिक्रिया हुई; इन दोनों ने ही उन्हें इस उपन्यास की रचना के लिए प्रेरित किया। उन्होंने उक्त वर्णित घटना को विश्वामित्र के आश्रम में हुए राक्षसों के उत्पात एवं राक्षसों द्वारा ऋषियों की हत्या के संदर्भ के रूप में प्रस्तुत कर वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति के यथार्थ स्वरूप से पाठकों का साक्षात्कार करवाया। कथा का आरंभ सिद्धाश्रम में हो रहे राक्षसों के उत्पात एवं अत्याचार से संतप्त विश्वामित्र की चिंता से होता है। सिद्धाश्रम को लेकर विश्वामित्र की चिंता वर्तमान संदर्भ में देश के राजनीतिक दायित्वहीनता की पोल खोलते है। उपन्यास में विश्वामित्र के माध्यम से राजा दशरथ की जिस राजव्यवस्था एवं प्रजा की दुर्दशा का चित्र खींचा गया है, वह देश के वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था एवं सामान्य जन की त्रासद स्थिति के जीवंत चित्र प्रस्तुत करता है। 'दीक्षा' की कथा में बताया गया है कि आधा जंबूद्वीप रावण के आतंक की चपेट में आ चुका है। परंतु राजा दशरथ अपने राजमहल में गृहकलह सुलझाने में ही व्यस्त हैं। पंचवटी में खर-दूषण और शूर्पणखा अपने शक्तिशाली सैनिक शिविर स्थापित किए बैठी है। संपूर्ण आर्यावर्त आपातकाल एवं संकटकालीन स्थिति में है। किन्तु अयोध्यानरेश जरा भी गंभीर नहीं थे। उनकी इस दायित्वहीनता के कारण रावण के फैलते आतंक को वर्तमान संदर्भ से साम्य करते हुए भारतीय सीमाओं में फैले

1. मनोरमा मिश्र, मिथकीय चेतना: समकालीन संदर्भ, वाणी प्रकाशन, सं0-2007, नयी दिल्ली, पृष्ठ सं0 333, 334

2. साहित्य यात्रा, संपादक डॉ कलानाथ मिश्र, सं0-जनवरी-मार्च 2015, साक्षात्कार।

आतंकवाद के वीभत्स स्वरूप को अंकित किया गया है। आर्यावर्त में रावण के बढ़ते राक्षसी उपनिवेश तथा आर्य राजाओं का उसके बढ़ते साम्राज्य को रोकने के लिए कोई पहल न करना तथा अपनी दायित्वहीनता का परिचय देना, समकालीन राजनीति के भोगवादी प्रवृत्ति को इंगित करता है। उपन्यास में वर्णित उक्त प्रसंग देश के शासन में बैठे शासक द्वारा अपने ही आंतरिक कलह को ही सुलझाते रहने की प्रवृत्ति की ओर इंगित करता है। नरेंद्र कोहली जी ने राजकीय दायित्वहीनता को ही राक्षसी उपनिवेश रूपी विदेशी आतंकवाद के बढ़ने का कारण माना है।

'अवसर' उपन्यास में निहित राजनीतिक यथार्थ : 'अवसर' उपन्यास की कथा रामायण के अयोध्याकांड पर आधृत है। अयोध्याकांड के प्रसंगों को आधुनिक एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित एवं उद्घाटित किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास में वर्णित अयोध्याकांड के प्रसंग किसी न किसी युगीन समस्याओं एवं घटनाओं का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हैं। कोहली जी ने अयोध्या के प्रसंगों के द्वारा देश के राजनीतिक यथार्थ को उजागर करने का प्रयास किया है। अयोध्या में चल रहे राजनीतिक षडयंत्र से भयभीत होकर दशरथ का यह कहना कि- 'साम्राज्य की सुरक्षा के लिए आवश्यकता होने पर किसी भी व्यक्ति को बिना अभियोग बताएँ भी बंदी किया जा सकेगा'[3], दशरथ की निरंकुशता को दर्शाता है। दशरथ की यह निरंकुशता सन् 1975 की आपातकालीन तानाशाही के वीभत्स रूप को मुखरित करती है, जहाँ नागरिक अधिकारों को समाप्त कर दिया गया तथा सत्ताधारियों के राजनीतिक विरोधियों को कैद कर लिया गया। सन् 1975 में देश में बने कुछ ऐसे ही हालातों को 'अवसर' उपन्यास में देखा जा सकता है।

'संघर्ष की ओर' उपन्यास में निहित राजनीतिक यथार्थ: 'संघर्ष की ओर' उपन्यास में चित्रकूट प्रसंग से पंचवटी प्रसंग एवं पंचवटी प्रसंग से सीता हरण के मध्य तक की रामकथा को अनेक काल्पनिक कथा प्रसंगों व पात्रों की सहायता से प्रस्तुत कर, उसके माध्यम से वर्तमान की यथार्थ घटनाओं पर प्रकाश डाला गया है। उपन्यास में जिस राक्षसराज रावण के राक्षसी एवं भ्रष्ट आचरण का प्रतिरूप दिखाया गया है, उसकी वह तस्वीर वर्तमान के शासन व्यवस्था में बैठे राजनीतिक सत्ताधारियों के आचरण से मिलती है। उपन्यास की कथा के अनुसार राक्षसराज रावण के साम्राज्य में कोई भी काम बिना रिश्वत लिये नहीं होता था। इस भ्रष्टाचार की जड़े निचले स्तर से राजकीय स्तर तक पहुँच चुकी थी। न चाहते हुए भी साधारण जन को छोटे-बड़े कामों के लिए घूस का सहारा लेना पड़ता था। वर्तमान में भी साधारण जन को किसी भी अधिकारियों तक अपनी बात पहुँचाने के लिए उनके अधिनस्थ कर्मचारियों को एक मोटी रकम देनी पड़ती है। वर्तमान की इस कथा को कोहली जी ने मूर्त के माध्यम से प्रतिलक्षित किया है। उपन्यास के एक काल्पनिक पात्र मूर्त को यूथपति से मिलने के लिए नायक को स्वर्णमुद्राओं की रिश्वत अनिच्छा से देनी पड़ती है। मूर्त की कथा को वर्णित कर कोहली जी ने वर्तमान शासन व्यवस्था को भी राक्षसराज की संज्ञा दी है, जहाँ भ्रष्टाचार एवं घूसखोरी से ही साधारण जनता के काम होते हैं।

'युद्ध' उपन्यास में निहित राजनीतिक यथार्थ : देश के सभी स्तरों पर उभरी भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था को कोहली जी ने समकालीनता का चोला पहनाकर, उसे अपने 'अभ्युदय' उपन्यास के अंतिम खण्ड 'युद्ध' के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उपन्यास की कथा में चित्रित अनेक शासकों एवं उनके शासन व्यवस्था संबंधित मिथकीय प्रसंगों, पात्रों एवं घटनाओं के माध्यम से वर्तमान राजनीतिक सत्ता में मिलनेवाली वृत्तियों जैसे पदलोलुपता, भ्रष्टाचार, कूटनीति, गुंडाराज, राजनीतिक दायित्वहीनता, युद्ध की विभीषिका इत्यादि का उद्घाटन किया गया है।

अविकसित राष्ट्र किष्किंधा में पूंजीवादी राष्ट्र लंका का कूटनायक मायावी सुरा तथा सुंदरी का प्रयोग कर अविकसित राष्ट्र किष्किंधा के वानर सम्राट बाली को पूर्णरूप से राक्षस अर्थात् शोषक बना देता है। बाली का मायावी द्वारा जन-शिक्षा के विरोध में प्रस्तुत तर्कों से सहमत होकर सुग्रीव के जन-शिक्षा व्यवस्था के प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए यह कहना कि-'शिक्षा आवश्यक है ... इसलिए भावी प्रशासकों को चुनकर शिक्षा के लिए लंका भेज दिया जाए। किष्किंधा का वानर राज्य शिक्षा संस्थानों का व्यय उठाने तथा बुद्धिजीवियों की स्वतंत्रता की चुनौती स्वीकार करने में असमर्थ है'[4], वर्तमान राजनीति के एक और यथार्थ चित्र को उजागर करता है। बाली के उक्त कथन वर्तमान संदर्भ में अपने देश के राजनीतिज्ञों पर जमें विदेशी प्रभाव एवं विदेशी प्रेम का सशक्त तथा प्रमाणिक वर्णन प्रस्तुत करता है।

इसी प्रकार बाली की सरकार द्वारा शराब विक्रय के पक्ष में बाली के समक्ष आर्थिक मुद्दों से संबंधित यह तर्क दिया जाना है कि- 'वह व्यक्ति व्यापारी है। यदि वह किसी चीज का निर्माण करता है और उसे बेचता है, लोग अपनी इच्छा से उसे खरीदते

3. नरेन्द्र कोहली, अभ्युदय भाग-1(अवसर), डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0 नई दिल्ली, सं0 2014, पृष्ठ सं0 201

4. नरेन्द्र कोहली, अभ्युदय खण्ड-2 (युद्ध) डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0 नई दिल्ली, सं0 2014, पृ0 सं0 34

हैं और इस सारे व्यापार से कर के रूप में राज्य को पर्याप्त आय होती है, तो यह अपराध कैसे है'[5], वर्तमान आधुनिक पूंजीवादी सरकारों की नीतियों को प्रतिबिम्बित करता है। वहीं बाली के पुनः आगमन से सत्ता परिवर्तन होना, विपक्ष का क्रूर दमन होना, सुग्रीव के समर्थकों की हत्या होना इत्यादि वर्णित प्रसंगों के द्वारा आधुनिक विश्व की अनेक क्रांतियों और सत्तापरिवर्तनोत्तर दमन की विविध राजनीतिक परिस्थितियों को उद्‌धाटित किया गया है।

पदलोलुपता प्रतिस्पर्धा को हमेशा नकारती है। रावण भी लंका की सत्ता का लोभी था। अतः उसके और सत्ता के बीच आनेवाली हर रूकावट को किसी भी नीति से हटाने के वह पक्षधर था। 'युद्ध' उपन्यास से उद्‌धृत यह पंक्तियाँ जिसमें कहा गया है कि- 'रावण ने कुंभकर्ण को यदि मदिरा के भांड में परिणत न कर दिया होता तो आज राक्षस साम्राज्य में कुंभकर्ण, रावण का सबसे बड़ा प्रतिद्वंदी होता। वह न बुद्धि में रावण से कम है, न बल में। न शस्त्रसंचालन में, न युद्ध कौशल में .... किंतु बेचारा आरंभ में ही रावण से मात खा गया। युद्ध और राजनीति के मार्ग पर अग्रसर होने के स्थान पर रावण ने उसे मदिरा के भांडो की ओर अग्रसर कर दिया।'[6] पद की लालसा में रावण द्वारा अपनाई गई गलत नीतियों को प्रदर्शित करता है। पद की लालसा में रावण द्वारा अपनाई गई गलत नीति के माध्यम से कोहली जी ने समकालीन राजनेताओं और राजनीतिज्ञों के उस चेहरे को समाज के समक्ष उजागर किया है जहाँ सत्ता पाने के लिए उनके द्वारा अक्सर गलत नीतियाँ अपनाई जाती हैं।

राजनीति में कूटनीति ना हो यह तो किसी युग में संभव नहीं है। शत्रु के संगठन एवं मित्रों में फूट डालने के हथकंडे बहुत पुराने हैं। नरेंद्र कोहली जी ने वर्तमान राजनीति के इस कूटनीति को 'युद्ध' उपन्यास के लंका प्रसंग के माध्यम से प्रतिलक्षित करने का प्रयास किया है। सीता को रावण की कैद से मुक्त कराने के प्रयास में लगे राम के संगठन एवं इस प्रयास में उनके साथ खड़े अनेक मित्रों को देखकर लंकापति रावण घबरा उठता है। ऐसे में राम के संगठन एवं मित्रों में फूट डालने के लिए रावण जिस कूटनीति का उपयोग करता है वह दर्शनीय है। जिन वानरों को वह तुच्छ कीड़े-मकोड़े समझता था, आज उन्हीं के पास उसने 'शुक' नामक दूत को संदेश लेकर भेजा, जहाँ दूत रावण का संदेश सुनाते हुए कहता है कि- 'शत्रुता किसी की और युद्ध में प्राण देने कोई और आया है। यदि मैंने राम की पत्नी का अपहरण किया तो उसमें तुम्हें मुझ जैसे मित्र के विरुद्ध युद्ध करने की क्या आवश्यकता है? इस युद्ध में विजय वानरों की हो या राक्षसों की, राज्य मेरा जायेगा या तुम्हारा? सेनाएँ मेरी नष्ट होंगी या तुम्हारी? परिजन मेरे मरेंगे या तुम्हारे? इस कंगले राम का कुछ भी दाँव पर नहीं लगा है। इस युद्ध की जय-पराजय से निरपेक्ष वह दोनों स्थितियों में लाभ में ही रहेगा। उस कंगले परदेशी के बहकावे में क्यों आते हो? युद्ध में सिवाय अपने और अपनी जाति के विनाश के सिवा तुम्हें और कुछ हाथ नहीं लगेगा।'[7] राक्षसराज रावण द्वारा भेजे गए इस प्रस्ताव के माध्यम से कोहली जी ने वर्तमान संदर्भ में अपने देश के राजनीति में आये षडयंत्रों और कूटनीति रूपी विष को उजागर करने का वास्तविक और सफल प्रयास किया है।

वर्तमान राजनीतिक कुचक्र जीवन को अस्थिर बनाते जा रहे हैं। यातना के दौर से गुजरते हुए आम आदमी का जीवन असहनीय बनता जा रहा है। उनके चेहरे पर आशा, उत्साह तथा विश्वास का नामोनिशान नजर नहीं आता। सर्वत्र नफरत की भावना जागृत हो रही है। लंका के मिथकीय प्रसंग में रावण के दो प्रहरियों का आपस में वार्तालाप करते हुए यह कहना कि- 'लंका में निर्धन स्त्री-पुरुष को प्रेम का अधिकार है क्या? उसके पति की किसी ने हत्या कर दी है, एक छोटा-सा बच्चा है और अपने बच्चे के पालन-पोषण के लिए प्रहरी दल में भर्ती होने आयी है। नायक को जँच गयी। बड़ी कँटीली स्त्री है, मैंनें कहा न। नायक ने उसे दल में भर्ती कर लिया। तब से बेचारी पहरा भी देती है और नायक की सेवा भी करती है'[8], वर्तमान राजनीति के दमनचक्र एवं गुडांशाही की झलक को प्रस्तुत करता है।

कोहली जी ने लंकाकांड प्रसंग के राम-रावण युद्ध को भी वर्तमान राजनीतिक यथार्थबोध के साथ चित्रित किया है। युद्ध मूलतः राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं के कारण होते हैं। लेकिन युद्ध का तत्काल घातक प्रभाव सामाजिक जीवन में सबसे अधिक पड़ता है। युद्ध के दौरान सैनिक तो सीमा पर लड़ते हैं, किंतु आंतरिक भागों में भय, दहशत और मँहगाई अपनी चरम-सीमा तक पहुँच जाती है। युद्ध की विभीषिका में जन-धन दोनों की ही हानि होती है। 'युद्ध' उपन्यास में वर्णित राम-रावण युद्ध प्रसंग का यह दृश्य - 'पराजय की ओर जा रहे रावण के राज्य में सैन्य संचय के लिए जानेवाली अधिकारियों को लंका के प्रत्येक घर के द्वार पर प्रतिशोध का सामना करना पड़ा था।..... स्थान-स्थान

5. नरेंद्र कोहली, अभ्युदय भाग-2 युद्ध, पृष्ठ सं0 15
6. नरेंद्र कोहली, अभ्युदय भाग-2, युद्ध, पृष्ठ सं. 452
7. नरेंद्र कोहली, अभ्युदय भाग-2 (युद्ध), पृष्ठ सं. 173
8. नरेंद्र कोहली, अभ्युदय - 2 (युद्ध भाग-2), डायमंड पॉकेट प्रा0 लि0, नई दिल्ली, सं0 2014

पर धमकियों और बल का प्रयोग करना पड़ा। आज की सेना में अधिकांश सैनिक डरा-धमका कर लाये गये थे.....। घर-घर में विलाप हो रहा था। कुछ घरों के युवक मारे जा चुके थे। कुछ परिवारों के घायल पड़े हुए थे और कुछ के आज लड़ने जा रहे थे। जो मृत समान ही समझे जा रहे थे। लोग रावण और उसके राज्य को कोस रहे थे।"[9] वर्तमान समय में युद्ध की विभीषिकाओं से होने वाली क्षति के दृश्य को बयां करता है।

लंका के युद्धक्षेत्र में हताहतों और मृतकों की व्यवस्था का वर्णन भी वर्तमान समकालीन युद्धभूमियों की याद दिलाता है। भारतीय शहीदों को सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी जाती है। वहीं पाकिस्तान जैसे देशों में मृतकों और हताहतों की कोई व्यवस्था नहीं की जाती है। उनकी लाशें युद्ध भूमियों में सड़ती हैं। युद्ध भूमियों में सैनिकों के शवों के साथ अमानवीय व्यवहार के इसी समकालीन सत्य का उजागर 'राम-रावण युद्ध' प्रसंग के माध्यम से की गई है। वहीं रावण द्वारा अपमानित करने पर, विभीषण का राजनीतिक शरणार्थी के रूप में राम के पास जाकर लंका की मुक्ति के लिए राजनैतिक समझौते करने के प्रसंग के माध्यम् से वर्तमान समय में होने वाले राजनीकि समझौतों को प्रतिबिम्बित करने का प्रयास कोहली जी द्वारा किया गया है। इस प्रकार नरेंद्र कोहली जी ने वर्तमान समय में देश के सभी स्तरों पर उभरी भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था को समकालीनता का बाना पहनाकर, अपने रामकथात्मक उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत करने का एक सफल प्रयास किया है।

निष्कर्ष : स्वतंत्रता के पश्चात भारत का विभाजन, भारत-पाक युद्ध, बांग्लादेश की आजादी कुछ ऐसी घटनाएं हैं, जिसने राम एवं उनसे जुड़े कथानकों की ओर आधुनिक रचनाकारों का ध्यान आकृष्ट किया है। रामायणकालीन कथाओं को आज की कहानी तथा पौराणिक पात्र को हमारे बीच का पात्र ही मानते हुए अनेक मिथकीय रचनाओं का सृजन कर साहित्यकारों ने आधुनिक जीवन के यथार्थ को उजागर किया है। 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' तथा 'युद्ध' इन चार खण्डों में विभाजित 'अभ्युदय' उपन्यास की रचना कर नरेंद्र कोहली जी ने अपने देश के वर्तमान यथार्थ स्वरूप से आधुनिक पाठकों का साक्षात्कार करवाया है। 'अभ्युदय' उपन्यास की कथा राम के पौराणिक कथा पर आधृत है, किन्तु कथा के पात्र और प्रसंग वर्तमान युग और परिवेश के अनुरूप प्रस्तुत किये गए हैं। उपन्यास की कथा में वर्णित प्रसंग आधुनिक राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, नारी विषयक, समाजसुधार के कार्यों के यथार्थ स्वरूप को प्रस्तुत करते हैं।

देश के सभी स्तरों पर उभरी भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था की झलक कोहली जी के 'अभ्युदय' उपन्यास में देखने को मिलती है। 'दीक्षा' उपन्यास में वर्णित विश्वामित्र के सिद्धाश्रम में हो रहे राक्षसों के उत्पात एवं अत्याचार की घटना संबंधी प्रसंगों, राजा दशरथ की राज्य-व्यवस्था एवं प्रजा की दुर्दशा संबंधी प्रसंगों, जंबूद्वीप में रावण के बढ़ते आतंक एवं राक्षसी उपनिवेश को रोकने में आर्य राजाओं की विफलताओं संबंधी प्रसंगों इत्यादि में वर्तमान राजनीतिक यथार्थ की झलक देखने को मिलती है।

'अवसर' उपन्यास में वर्णित अयोध्या में चल रहे राजनीतिक षडयंत्रों के प्रसंगों में सन् 1975 की आपातकालीन तानाशाही के वीभत्स रूपों से पाठकों का साक्षात्कार होता है। वहीं 'संघर्ष की ओर' उपन्यास की कथा में चित्रित राक्षसराज रावण का साम्राज्य भी वर्तमान राजनीतिक सत्ताधारियों के राक्षसी एवं भ्रष्ट आचरण को उजागर करता है।

वर्तमान राजनैतिक सत्ता में फैले पदलोलुपता, भ्रष्टाचार, कूटनीति, गुंडाराज, राजनीतिक दायित्वहीनता, युद्ध की विभीषिका जैसी अनेक वृत्तियों को 'युद्ध' उपन्यास के माध्यम से उद्‌घटित किया गया है। किष्किन्धा के शासक एवं शासन व्यवस्था वर्तमान युग के राजनीतिज्ञों के शिक्षा, शराब संबंधी गलत नीतियों तथा सत्तापरिवर्तनोत्तर दमन की विविध राजनीतिक परिस्थितियों को उद्‌धाटित करती है। इस प्रकार नरेंद्र कोहली जी के द्वारा रचित 'अभ्युदय' उपन्यास के चारों खण्डों में समाहित रामकथा के मिथकीय प्रसंगों एवं पात्रों के माध्यम से वर्तमान राजनीतिक यथार्थ के दर्शन होते हैं।

◆◆◆

प्रकाशन शोध प्रक्रिया का अंतिम और अत्यंत महत्त्वपूर्ण चरण होता है। शोध समाज की मूल्यवान उपलब्धि है। इसे समाज के बीच आना ही चाहिए जिससे समस्त मानवता लाभ उठा सके। प्रकाशन के सीमित अवसर शोध को संकुचित करते हैं।

9. नरेंद्र कोहली, अभ्युदय -2 (युद्ध भाग-2), डायमंड पॉकेट प्रा0 लि0, नई दिल्ली, सं0 2014, पृ0 सं0 576